

महत्वपूर्ण अवतरणों की व्याख्या -

शास्त्री प्रथम खण्ड
अधिवार्य हिंसा-पत्र
शब्दमाषा हिंदी

Page No. :
Date : / /

अधिवार्य-वध

11 अधिवार्य खोकर बैठ रहना यह महादुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को जी दण्ड देना धर्म है।
इस तथ्य पर ही कौरवों से पांडवों का युद्ध हुआ।
जो मध्य भारतवर्ष का कल्पान्त का कारण हुआ।

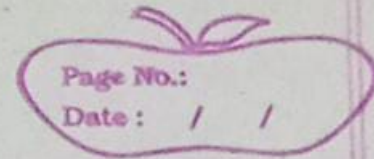
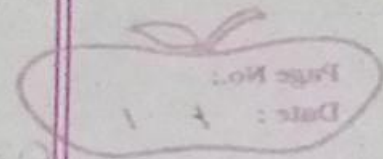
उत्तर:-

दर्श -

प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा पारथ पुस्तक अथर्व-वध खण्ड काव्य के प्रथम सर्ग से उद्धृत है। इसके रचयिता शब्दमाषी कवि मैथिलीशरण गुप्त जी हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि महाभारत युद्ध के होने के कारण क्या थे? कवि का कहना है कि संसार का सबसे बुरा कर्म अपने अधिवार्य का उपयोग न करना है। परन्तु जब अधिवार्य करने का उद्योग किया जाता है तो निश्चय रूप से कुल बन्धु-बांधवों का भी वध कर देना पड़ता है। महाभारत युद्ध होने का मूल कारण यही है।

व्याख्या - उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से कवि कहता है कि अनुष्य को अपना अधिवार्य खोकर हाथ पर हाथ धरे बैठ रहना सबसे बुरा काम है। अपने अधिवार्यों को प्राप्त करने के लिए यदि अपने बन्धुओं को जी दण्ड देना पड़ जाये तो इस कर्म को धर्म समझ कर अवश्य करना चाहिए। यह कर्मी भी अधर्म की श्रेणी में नहीं आता है। कौरव और पांडवों में न्याय की रक्षा के निमित्त ही यह युद्ध हुआ। इसमें कहीं कोई सन्देह नहीं है। महाभारत के युद्ध के कारण ही भारतवर्ष के कल्प का अन्त हुआ।

विशेष:- शब्दमाषी कवि मैथिली शरण गुप्त जी का स्पष्ट ज्ञान है कि ज्ञानक को अपना अधिवार्य कर्मी भी खोना नहीं चाहिए; क्योंकि यह एक दोष भागे



महा पाप है। सत्य और न्याय की रक्षा करने के मार्ग में यदि अपना प्रिय पात्र भी सामने खड़ा हो तो सर्वेवमानव को सत्य के साथ खड़ा रहना चाहिए। ऐसा करने से समाज में एक सकारात्मक सन्देश जाता है। साथ ही- साथ सामान्य लोगों का विश्वास भी न्याय के प्रति बढ़ता है। अतः अनुष्य को विषम से विषम परिस्थिति में भी अप्पर्म, असत्य और अन्याय का साथ नहीं देना चाहिए।

डॉ० देवचरण प्रसाद

इसो० प्रो० हिन्दी

03/12/20

रा० अ० खं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

निबन्धमाला

लेखक :- आशा किशोर एवं सुरेश्वरशर्मा

वर्षिक :- गाँधीजी और मैं

लेखक :- पंडित रामनन्दन मिश्र

शाली द्वितीय खण्ड, अठ्ठि-पत्र - राष्ट्रभाषाहिन्दी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :-

1. प्रश्न :- गाँधीजी सन् 1926 में दरभंगा क्यों आये थे?

उत्तर :- निबन्धकार पंडित रामनन्दन मिश्र जी अपने संस्मरणों में लिखते हैं कि स्वतंत्रता आन्दोलन के क्रम में जन-जागरण अभियान के तहत गाँधीजी दरभंगा आये थे। उन्होंने यहाँ पर एक महिला सभा को संबोधित किया था।

प्रश्न :- गाँधीजी ने दरभंगा में आयोजित सभा में किस सभा का विरोध किया था?

उत्तर :- श्री मिश्र जी अपने निबन्ध में गाँधीजी द्वारा महिला परदा-प्रथा का कड़ा विरोध किया गया था, इसका विस्तार से वर्णन करते हैं। सभा की समीप के उपरान्त वहाँ उपस्थित स्वतंत्रता सेनानियों से कहा कि महिला परदा-प्रथा का आप सब लोग मिलकर विरोध करें। महिला शक्ति को समझने का प्रयास करें। यदि महिलाओं के बीच परदा-प्रथा की प्रचलन बन्द नहीं हुआ तो हमारा आन्दोलन सफल नहीं होगा। इसलिए गाँधीजी द्वारा दरभंगा की सभा में महिला परदा-प्रथा का विरोध किया गया था।

3. प्रश्न :- लेखक गाँधीजी की यात्रा के सम्बन्ध में क्या कहते हैं?

उत्तर :- निबन्धकार अपने निबन्ध में गाँधीजी की यात्रा के सम्बन्ध में विस्तार से वर्णन करते हैं।
शेष आगे -

लोक महोदय लिखते हैं कि गौपीजी अक्सर रेल के
दूसरे डब्बे में यात्रा करते थे। मैं भी उनके साथ रहता था।
गौपीजी के लिए एक डिब्बा सुरक्षित रहता था। प्रत्येक
स्टेशन पर चन्हा बखूबी होती थी। पूर्व से ही गौपीजी के
सम्पर्कों को यह जानकारी प्राप्त हो जाती थी। इसलिए
रेलवे स्टेशन पर भारी भीड़ एकट्ठा हो जाती थी। स्टेशन
पर गाड़ी रुकने पर अपना हाथ बाहर निकाल देते थे
और लौटा दिख लौलकार उन्हें दान देते थे। चन्हा में
प्राप्त समस्त राशि 'हरिजन सेवक संघ' को भेंट दिया
जाता था। इस प्रकार लोक महोदय ने गौपीजी के
यात्रा के सम्बन्ध में उल्लेखनीय वर्णन किया है।

डॉ० देव चरण प्रसाद 03/12/20
एस० एम०, दिल्ली
राष्ट्र संमेलन सुरसेना, पूर्णियाँ